SWAMI VIVEKANANDA MAHILA MAHAVIDHYALAYA, ROOPANGARH

FACULTY NAME : MS.FARAH

COURSE : BA III YEAR

PAPER : WESTERN POLITICAL THINKER

SUBJECT : POLITICAL SCIENCE

UNIT : I

CHAPTER NAME : ARISTOTLE

SESSION NAME : CITIZENSHIP

पुनरावलोकन (RECAP)

- अरस्तु का जीवन परिचय
- अरस्तु की अध्ययन पद्धति
- स्वर्णिम मध्य मार्ग का सिद्धांत

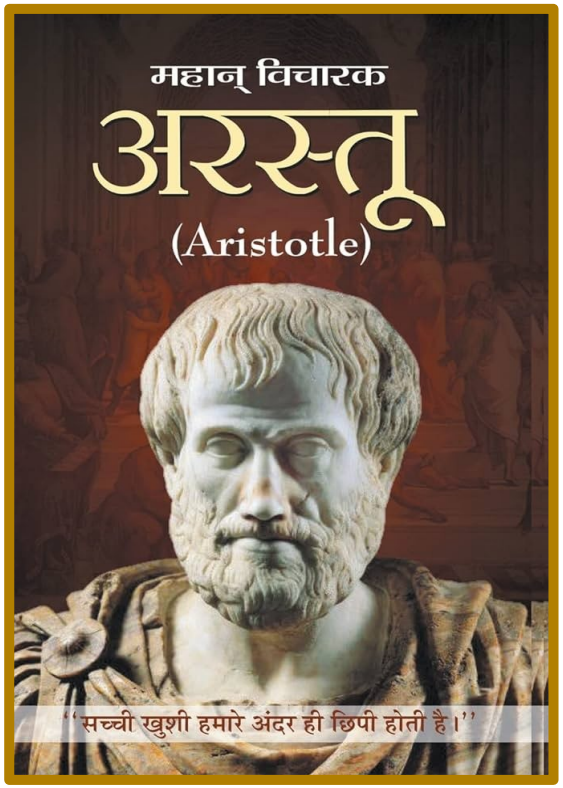

सत्र रूपरेखा (SESSION AGENDA)

- नागरिकता का मूल आधार
- शासक व शासित के बीच संबंध

शिक्षण उद्देश्य (TEACHING OBJECTIVE)

- छात्राएं अरस्तु के नागरिकता के आधार को समझ सकेंगी ।
- नागरिक होने के गुणों से परिचित होगी ।

नागरिकता का अर्थ

अरस्तु ने निवास , वंश अथवा कानूनी अधिकारों को नागरिकता का आधार स्वीकार नहीं करते हुए बताया कि नागरिक वह व्यक्ति होता है जो राज्य के न्यायिक प्रशासन के कार्य में अथवा सभा के सदस्य के रूप में विधि निर्माण के कार्य में भाग लेता है।

अरस्तु की नागरिकता के लिए योग्यताए

- शासन करने की योग्यता हो
- शासित होने का गुण हो हो
- व्यक्तिगत संपत्ति होना आवश्यक
- राज्यों के कार्यों में रुचि हो

नागरिकता के लिए अयोग्यताएं

- दास
- श्रमिक
- कारीगर
- शिल्पी
- स्त्रियां
- बच्चे

नागरिकता संबंधी विचारों की आलोचना

- संकुचित परिभाषा
- विरोधाभासी सिद्धांत
- विशाल राज्यों पर लागू नहीं हो सकता
- स्त्रियों को नागरिकता से वंचित करना अमानवीय

THANK YOU